INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

हजारी प्रसाद द्विवेदीकृत' बाणभट्ट की आत्मकथा' में बुद्ध–शिक्षाओं का प्रभाव

शोधार्थी पीएच.डी. :सरोज देवी शर्मा हिंदी विभाग श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,पीली बंगा, हनुमानगढ. राजस्थान–335801

प्रस्तावना

'बाणभट्ट की आत्मकथा'में बाबा के रूप में द्विवेदी जी का साहित्य बुद्ध की षिक्षाओं से प्रभावित है। घोषणा करते हैं– ''देख रे, तेरे शास्त्र तुझे धोखा देते हैं। जो तेरे भीतर सत्य है, उसे दबाने को कहते हैं, जो तेरे भीतर मोहन है, उसे भुलाने को कहते हैं, जिसे तूं पूजता है उसे छोड़ने को कहते हैं। मायाविनी है यह मायाविनी, तू इसके जाल में न फँस।''[1] ''इस ब्रह्मांड का प्रत्येक अणु देवता है। देवता ने जिस रूप में तुझे सबसे अधिक मोहित किया है, उसी की पूजा कर।''[2] द्विवेदी जी का साहित्य बुद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित है। परम्परा बोध से ही गलत साबित करने की चेश्टा उन्होंने की है – ''न जाने किस पुण्यक्षण में, किसी अज्ञात काल के अज्ञात मुहूर्त में हमारा यह ग्रह पिण्ड, जिसका नाम पृथ्वी दिया गया है, सूर्य मण्डल से टूट गया था। उस समय यह ज्वलंत गैसों से भरा हुआ था। शुरू से अंत तक केवल ताप से परिपूर्ण इस त्रुटित धरित्री खण्ड के किस कण में जीवतत्व वर्तमान था, कोई नहीं जानता उसके बाद लाखों वर्श तक यह पिण्ड ठण्डा होता रहा, चक्कर मारता रहा, दुर्दान्त वेग से दौड़ता रहा .....लाखों वर्शों तक तप्त धातुओं की लहाछेह वर्शा होती रही, लाखों वर्ष धारित्री का ऊपरी भाग धसकता मसकता रहा, लाखों वर्ष तक इसकी पपड़ी ठंडी होती रही ।....न जाने कब से जीवतत्व उन तप्त धातुओं में छिपा हुआ अनुकूल अवसर की प्रतिक्षा में बैठा हुआ था। समस्त जड़ शक्ति के मस्तक पर पैर रखकर जब वह मृदुल तृणांकुर के रूप में पैदा हुआ, तो इतिहास में अघटित घटना ही घटी थी। जड़ शक्ति में सबसे अधिक शक्तिशाली थी महानकर्ष की शक्ति ग्रेविटेशन पावर। नगण्य तृणांकुर ने उसकी प्रतिभा नहीं मानी, वह सिर उठा के खड़ा हो गया। जीवतत्व विकसित होता गया। एक कोश से अनेक कोशों में सरल सधांत से जटिल समूह के रूप में, कमेन्द्रिय प्रधान जीवों से ज्ञानेन्द्रिय प्रधान जीवों के रूप में और अंत में उसने मनुष्य के रूप में अपने को प्रकट किया। मनुष्य उसकी अन्तिम परिणिति है।[3] उपर्युक्त कथन में मानव की जिजीविशा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। द्विवेदी जी का साहित्य बुद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित है। मृत्यु लोक को सुखी बनाने के लिए भौतिक सम्पन्नता को ही पर्याप्त नहीं मानते, बल्कि वे अर्न्तवृत्तियों के परिमार्जन पर बल देते हैं। वे त्याग, तपस्या और संयम जैसे गुणों को अर्जित करना अवश्यम्भावी मानते हैं– ''सत्य तब जाकर वास्तव में परिपूर्ण होता है, जब उसे जीवन में स्थान मिल जाये और सत्य को जीवन में ग्रहण करने की योग्यता बड़े कठोर धैर्य और दीर्घ तप से प्राप्त होती है। जिसमें वह धैर्य नहीं है और वह तप नहीं है, उसके लिए मनुष्य के समस्त सद्गुण केवल बात की बात रह जाते हैं, वे इसे जीविका उपार्जन का साधन बना लेते हैं। जब तक नाना विश य विकारों की ओर खींचने वाले इन्द्रिय वष में नहीं आ जाते, तब तक बुद्धि प्रतिष्ठित नहीं होती। उससे देखा हुआ तथ्य मलिन और अविश्वसनीय होता है।''[4] मनुष्य की चरितार्थता प्रेम मे हैं, मैत्री में है, त्याग में है अपने को सबके मंगल के

---

[1] बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ0 63

[2] –वही – पृ0 64

[3] विचार प्रवाह – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ0 201

[4] कल्पलता – हजारी प्रसाद द्विवेदी – पृ0 40

लिये निःषेश भाव से दे देने में है।''[5] आचार्य द्विवेदी त्याग, तपस्या, प्रेम संयम आदि जैसे गुणों को रूढ़ धार्मिक परम्परा की संकीर्ण परिधि में रखकर नहीं, वृहत........सांस्कृतिक सन्दर्भों के बीच प्रस्तुत करते हैं। वे जड़ नैतिकतावादी दृष्टि से प्रभावित नहीं है। यह ठोस यथार्थवादी जीवन दर्षन है। इसमें मृत्युलोक को सुखमय बनाने की अद्भुत क्षमता है। यही उनका ''नवमानवतावद'' है। द्विवेदी जी का साहित्य बुद्ध की षिक्षाओं से प्रभावित है। मानव शरीर को 'जड़ तत्वों का सर्वाधिक सामंजस्यपूर्ण संस्थान''[6] मानते हैं। ''त्याग और समर्पण'' भाव बुद्ध शिक्षाओ के जीवन—दर्शन के मेरूदण्ड हैं। ये गुण ही व्यक्ति और समिष्ट पक्ष को कल्याण की पक्ष की ओर ले जाते हैं। अखण्ड मानव—सृष्टि में उनका विश्वास है और आत्मोत्सर्ग में आस्था........। मनुश्य के अस्तित्व की आस्था विसर्जन में है। एक दृश्टि से विसर्जन में ही अर्जन है। वह अपने लघु को खोता है और महानन् को प्राप्त करता है। बुद्ध धर्म के संदर्भ में कहते है— ''मनुश्य अपने आपको महानन रुप में समर्पण करता है तभी वह मनुष्य बनता है उसका सम्पूर्ण जीवन चरितार्थ होता है।''[7] इस उक्ति में उद्बोधन है, प्रेरणा है और सबसे बढ़कर चुनौती को स्वीकार कर हर तरह की मृत्यु को ललकारने की साहसिकता है।

निष्कर्ष:

कहा जा सकता है कि बुद्ध की मान्यता है कि धृत्री के आत्मदान की सार्थकता से प्रभावित है। क्योंकि इसमें लोक मंगल का भाव निहित है। आज पूरी जगती स्वार्थ के विकराल दानव से ग्रसित है। एक दूसरे के अहित को लेकर मानव जी रहा है। जब अपने को दलित द्राक्षा के समान निचोड़कर—समस्त सुख दुखों की तेल बाती में जलाकर— मनुष्य अपने आपको 'महान एक' को समर्पण करता है तो वह मनुश्य बनता है। उसका सम्पूर्ण जीवन चरितार्थ होता है।

[5] —वही— पृ0 11

[6] विचार और वितर्क— हजारी प्रसाद द्विवेदी — पृ0 37

[7] विचार प्रवाह — हजारी प्रसाद द्विवेदी — पृ0 211